लोक मानस -

’लोकमानस‘ लोकवार्ता को जन्म देने वाली मूल प्रवृत्ति की नींव का नाम है। यह मानस आदिमानस तथा उसके अवशेष ही हैं। लोकवार्ता एवं लोक साहित्य के निर्धारक तत्वों में सर्वाधिक विचारणीय तत्व लोकमानस है। ’लोकमानस‘ की अवधारणा को समझने के लिए उसके इतिहास पर दृष्टि डालनी जरूरी है। प्रसिद्ध फ्रायड मनोचिकित्सक ने चेतन और अवचेतन मानस के मध्य अत्यन्त ही विचारोत्तेजक ’अवचेतन मानस‘ की खोज की। ’अवचेतन मानस‘ के संबोधन ने संपूर्ण साहित्य क्षेत्र में हलचल पैदा कर दी। यह ’अवचेतन मानस‘ ही हमारे समस्त व्यक्तित्व को प्रेरित तथा निर्मित करता है। यह ’अवचेतन मानस‘ पूर्वजों से प्राप्त संस्कार है। कालांतर में अवचेतन मानस का विश्लेषण करते हुए उसके दो भेद स्वीकार किए गए - (1) सहज अवचेतन तथा (2) उपार्जित अवचेतन। इस सहज अवचेतन को ही ’लोकमानस‘ के रूप में स्वीकार किया गया है।

लोकमानस मानव समुदाय का मानसिक स्वरूप है। मानव समुदाय के मानसिक स्वरूप को 3 भागों में बाँटा जा सकता है।

(1) मुनिमानस - मनुष्य ने बर्बरावस्था से विकसित होकर आज की सभ्यता अर्जित की है। सभ्यता के विकास के साथ उपार्जित मानव समाज का मानसिक स्वरूप मुनिमानस है। मनुमानस से दर्शनशास्त्र, विज्ञान तथा उच्च कलाओं का जन्म होता है।

(2) जनमानस - यह मध्य की स्थिति है। जनमानस साधारण व्यावसायिक बुद्धि से संबंधित है।

(3) आदिम मानस - लोकमानस विकसित होने पर भी मनुष्य आदिम मानस का रूपांतर है। लोकमानस वही मानसिक स्थिति है जो आज भी आदिम मानस की परंपरा में है तथा उसी का अवशेष है। लोकमानस से लोकवार्ता, लोकसंस्कृति तथा लोकसाहित्य का जन्म होता है। इस तरह सभ्य समाज में मुनिमानस सबसे ऊँचा धरातल है। लोकमानस सबसे नीचे का धरातल है और मध्य की स्थिति जनमानस की है।

’लोकमानस‘ की सत्ता असंदिग्ध है। आज का मानव कितनी ही शिक्षित, प्रबुद्ध, तार्किक वैज्ञानिक हो या साधारण जन हो, आदिम मानवीय बातों में ही उसकी रुचि होती है। घोर बुद्धिवादी भी अद्भुत, अलौकिक तथा असंभव प्रतीत होने वाली मानवीय तथा मानवेतर-कथाओं में आकर्षण का अनुभव करता है। इसलिए यह तो स्पष्ट ही है कि ’लोकमानस‘ को आदिम मन की मनोवृत्ति का ही अवशेष कहा जा सकता है। वस्तुतः ’लोकमानस‘ की सत्ता का उद्घाटन भी लोकवार्ताविदों ने ही किया है।

निर्विवाद रूप से ’लोकमानस‘ की सत्ता का उद्घाटन सांस्कृतिक क्षेत्र की अभूतपूर्व घटना कही जा सकती है। जेम्स ड्रेवर ने ’लोकमनोविज्ञान‘ की व्याख्या करते माना कि उसकी उपयोगिता आदिम लोगों के विश्वासों, रीति-रिवाजों, रूढ़ियों आदि के अध्ययन में स्वयंसिद्ध प्रमाणित होती है।

लोकमानस के लक्षण -

फेजर ने लोकमानस के दो प्रधान लक्षण बताए हैं -

(1) लोकमानस विवेकपूर्ण (च्तमसवहपबंस) होता है। इसका अर्थ यह है कि लोकमानस नितान्त तर्कशून्य नहीं है बल्कि यह कि वे तर्क तो कर सकते हैं लेकिन उनका तर्क का आधार केवल कर्म प्रवाह तक ही सीमित होता है। लोकमानस के कार्य-कारण की पृष्ठभूमि में आज भौतिक व यथार्थ कारणत्व तथा कार्यत्व का महत्व नहीं होता। लोकमानस की कार्यगत व्याख्या में विरोधी तत्वों का भी संयोग रहता है।

(2) दूसरा लक्षण लोकमानस का मिस्टिक (उलेजपब) अथवा रहस्यपूर्ण होना है। इस कारण यह है कि लोकमानस अपने चहुँओर घटित होने वाली स्थितियों के मूल में परा प्राकृतिक शक्तियों के योग को मान्यता देता है। यदि गहराई से देखा जाए तो मूल सृष्टिकालीन मनुष्य के जन्मकाल की सहज प्रतिक्रिया व्यक्त करने वाला ’लोकमानस‘ ही रहा होगा। फ्रायड के सिद्धांत के अनुसार मनुष्य में दो आधारभूत भाव विद्यमान रहते हैं - (1) रति (2) भय। रति में विस्तार का भाव है। इस विस्तार के कारण ही मनुष्य बाहरी जगत् से आनन्दमूलक संपर्क बनाता है। दूसरा भाव भय है। भय में आत्मरक्षा का भाव निहित है। इन दोनों भावों के कारण ही लोकमानस ’स्व‘ और ’पर‘ का भेद नहीं करता। इसके लिए संपूर्ण सृष्टि उसी के समान सत्ता रखती है।

(3) लोकमानस का तीसरा लक्षण होता है कि वह मृत और जीवितों में कोई भेद नहीं करता। मृतक भी उसे जीवितों की ही तरह चित्रों अथवा मूर्तियों में सत्तावान प्रतीत होते हैं। लोकमानस आज भी स्वप्नों में भी मृत प्राणियों को देखकर उन्हें जीवितों के तुल्य ही महत्व देता है।

(4) चैथा लक्षण है कि लोकमानस अंश और समय में कोई भेद नहीं मानता। इस भेदवादी अवधारणा को पुष्ट करने वाली अनेक कहानियों में हमें ऐसे अभिप्राय मिल जाएँगे जब किसी व्यक्ति का पुतला बनाकर उसे काटना या उसमें सुई चुभोने जैसे कार्यों के द्वारा यह समझना कि उस मूल व्यक्ति को भी वैसी ही पीड़ा हो रही होगी। लोकमानस तो व्यक्ति और उसके नाम में भी भेद नहीं करता।

(5) लोकमानस की एक अन्य विशेषता यह है कि वह तुल्य और अतुलनीय में कोई भेद नहीं करता। टोना-टोटका इसी भावना का परिणाम है। शत्रु का पुतला बनाकर उसे काट देने की भावना के मूल में यही लोकमानस के भाव मूर्त स्वरूप में होते हैं। वे अमूर्त को भी मूर्त ही मानते हैं।

(6) लोकमानस कार्य करण पर भी विश्वास करता है। वह यह तो मानता ही है कि प्रत्येक कार्य के पीछे कोई कारण तो अवश्य होता है, परंतु चिंता का विषय ’कैसे‘ और ’क्यूं‘ नहीं बल्कि ’कौन‘ की कल्पना है। वर्षा का होना, रात-दिन का होना, इनके पीछे कारण तो है कि किंतु इन कारणों के पीछे वे किसी व्यक्ति का हाथ मानते हैं। इसीलिए लोकमानस के लिए पृथ्वी माता है, सूर्य, अग्नि, पवन आदि देवता है। इनकी इच्छा से ही सृष्टि का संचालन होता है। लोकमानस कार्य और कारण स्वीकार तो करता है, भले ही वह वास्तविक न हों।

\*\*\*